

DR. KESHAVRAO SADASHIVSHASTRI MUSALGAONKAR

Recipient of Rashtrapati Samman (2008), Dr. Keshavrao Sadashivshastri Musalgaonkar is the son of Dharmaratna, Dharmamartanda- Mahamahopadhyaya Pandit Sadashivshashtri Musalgaonkar. He belongs to a family that has two scholarly people who are the recipients of Mahamahopadhyaya Samman by British Government and Rashtrapati Samman by Government of India for their dedication to the promotion of Sanskrit language and literature in India.

2. Born on March 29, 1930, Dr. Musalgaonkar received his D. Phil. from Allahabad University, Allahabad in 1963, M.A. (Sanskrit) from Agra University, Agra in1955, Sahityaratna - Hindi Sahitya Sammelan, Prayag in 1954, M.A. (Hindi) from Agra University, Agra in 1952. The most distinctive feature of his contribution to the promotion of Sanskrit learning has been that in spite of his long association with secondary education in the schools he has been instrumental in enriching the curriculum and teaching at the higher education.

3. Dr. Musalgaonkar retired as a Principal, Government Higher Secondary School, Byohari, Sivani (M.P.) in 1990. He devoted himself to the cause of free teaching of Sanskrit language at places like Gwalior, Indragarh (Datia); Magaroni (Shivpuri); Kahani (Sivani); Lakhanadaun (Sivani), Ujiain etc. These places in the state of Madhya Pradesh are academically backward and poor but despite this he promoted Sanskrit language and literature by making them accessible to the learners in these areas as a part of his Free Education Mission and Extension Programme.

4. Dr. Musalgaonkar's critical acumen and expertise in Mimansa Darshan and Natyashastra has been widely praised. His endeavours to encourage Sanskrit are reflected in his substantial writings which include works like Sanskrit Mahakavya Ki Parampara; Adhunik Sanskrit Kavya Parampara; Natyamimansa- Part 1-2; Kalidasa Mimansa; Natyashashtra Paryalochan and a translation work entitled Bhavbhooti. His urge to make Sanskrit literature accessible to all encouraged him to write commentaries through explanatory works in exceptionally and clear style which includes Harshacharitam; Shishupalvadhmahakavyam; Dashroopkam: Naishadhmahakavyam; Rasagangadhar; Shrimadbhagvatgeeta; Dhvanyalok. His books are displayed in the libraries of India and of the world including the libraries of University of Chicago (USA) and International Hebrew University, Jerusalem (Israel). His dexterity and genius is also recognized when his books are being used as reference material in the ambitious project of Government of Uttar Pradesh on 'Sanskrit Shastron ka Vrihad Itihas.

5. Dr. Musalgaonkar's contribution to Sanskrit language and literature has been recognized by the state government and the central government when he received coveted awards like Rashtrapati Samman in the year of 2008, Vishwabharati Award in 2017 by the government of Uttar Pradesh, Mahakavi Kalidas Samman in 2012 by the government of Madhya Pradesh. He is also the recipient of Rajshekhar Samman in 2008 (Conferred for the best work i.e. Sanskrit Natya Meemansa), Bharatmuni Samman by Akhil Bhartiya Vidwat Parishad, Kashi in 2007, Maharashtra Bhooshan Samman by Maharashtra Samaj in 2008, Shikshaka Samman by UMC in 2005; Kalasanmvahak Samman by Dakshin Madhya Kshetra Sanskriti Kendra, Nagpur in 2009 etc.



डॉ. केशवराव सदाशिवशास्त्री मुसलगाँवकर

वर्ष 2008 का राष्ट्रपति सम्मान प्राप्तकर्ता डॉ. केशवराव सदाशिवशास्त्री मुसलगाँवकर, धर्मरत्न, धर्ममार्तण्ड-महामहोपाध्याय पण्डित सदाशिव शास्त्री मुसलगावंकर के पुत्र हैं। आप उस घराने से संबंध रखते हैं जिसमें दो महाविद्वान हुए हैं और जिन्हें भारत में संस्कृत भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने में उनके द्वारा दिखाए गए समर्पण के कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा महामहोपाध्याय सम्मान और भारत सरकार से राष्ट्रपति सम्मान दिया गया ह।

2. आपका जन्म 29 मार्च, 1930 को हुआ आपने 1963 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से डी.फिल, 1955 में आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से कला-निष्णात (संस्कृत), 1954 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से - साहित्य रत्न, 1952 में आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से कला-निष्णात (हिन्दी) की। संस्कृत ज्ञान को बढ़ावा देने में आपके योगदान की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि लम्बे समय तक विद्यालयों में माध्यमिक शिक्षा से जुड़े रहने के बावजूद आप उच्चतर शिक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम और अध्यापन प्रणाली को समृद्ध बनाने के माध्यम रहे हैं।

3. आप वर्ष 1990 में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ब्योहारी सीवानी (मध्य प्रदेश) के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत हुए। आपने ग्वालियर, इंदिरागढ़ (दतिया); मगरोनी (शिवपुरी); कहानी (सिवानी); लखनदौन (सिवानी), उज्जन आदि स्थानों पर संस्कृत भाषा के अध्यापन हेतु अपने को समर्पित कर दिया। मध्य प्रदेश में स्थित ये क्षेत्र शक्षिक रूप से पिछड़े हुए और गरीब क्षेत्र हैं किन्तु इसके बावजूद इन क्षेत्रों में आपके नि:शुल्क शिक्षा मिशन और विस्तार कार्यक्रम के रूप में नौसिखियों के लिए इसे सुलभ बनाकर संस्कृत भाषा और साहित्य को बढ़ावा दिया।

4. मीमांसा दर्शन और नाट्य शास्त्र में आपकी कुशाग्रता और दक्षता की भरपूर प्रशंसा हुई ह। संस्कृत को बढ़ावा देने के आपके प्रयास आपकी महत्वपूर्ण रचनाओं में परिलक्षित होते हैं। आपकी रचनाओं में संस्कृत महाकाव्य की परम्परा; आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा; नाट्य मीमांसा भाग 1-2; कालिदास मिमांसा; नाट्य शास्त्र पर्यलोचन और भावभूति शीर्षक वाला अनुवाद कार्य सम्मिलित हैं। सभी के लिए संस्कृत साहित्य उपलब्ध कराने की आपकी लालसा ने आपको असाधारण और स्पष्ट तरीके से व्याख्यात्मक कार्यों के जरिए टीका-टिप्पणी लिखने के लिए प्रेरित किया, जिनमें हर्ष चरितम; शिशुपालवधमहाकाव्यम; दशरूपकम; नशाध महाकाव्यम; रासगंगाधर; श्रीमद्भागवतगीता; ध्वन्यलोक सम्मिलित हैं। आपकी पुस्तकें भारत के पुस्तकालयों और शिकागों विश्वविद्यालय (अमेरिका), अन्तरराष्ट्रीय हेब्रू विश्वविद्यालय, जेरूसलम (इजराइल) के पुस्तकालयों सहित विश्व के पुस्तकालयों में प्रदर्शित की गई हैं। ''संस्कृत शास्त्रों का वृहद इतिहास'' के संबंध में उत्तर प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना में आपकी पुस्तकों का संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग करके आपकी दक्षता और प्रतिभा को स्वीकार किया गया ह।

5. संस्कृत भाषा और साहित्य में आपके योगदान को राज्य सरकार और केन्द्र सरकार द्वारा सम्मानित किया गया ह। आपको सम्मानजनक पुरस्कार जसे वर्ष 2008 में राष्ट्रपति सम्मान, 2017 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विश्वभारती अवार्ड, 2012 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा महाकवि कालिदास सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको वर्ष 2008 में राजशेखर सम्मान (सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के लिए दिया जाने वाला अर्थात संस्कृत नाट्य मीमांसा), 2007 में अखिल भारतीय विद्वत परिषद,काशी द्वारा भारतमुनि सम्मान, 2008 में महाराष्ट्र समाज द्वारा महाराष्ट्र भूषण सम्मान, 2005 में यूएमसी द्वारा शिक्षक सम्मान, 2009 में दक्षिण मध्य क्षेत्र संस्कृति केन्द्र, नागपुर द्वारा कला संवाहक आदि सम्मान भी दिए गए हैं।